विशद
अभिनन्दननाथ विधान
माण्डला

मध्य में - ॐ
प्रथम - 9
द्वितीय - 18
तृतीय - 36
चतुर्थ - 72
कुल अर्घ-135

रचयिता :

प.पू. क्षमामूर्ति 108 आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **विशद श्री अभिनंदननाथ विधान**

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – **2016**

प्रतियाँ – **1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी, क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी 9829076080 , आस्था दीदी 9660996425, सपना दीदी9829127533' आरती दीदी**

प्राप्ति स्थल –
1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

4. विशद साहित्य केन्द्र-हरीश जैन
जय अरिहंत ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली, नियर लाल बत्ती चौक
गाँधी नगर, दिल्ली मो. 981815971, 9136248971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

:- अर्थ सौजन्य :-

श्री विजय कुमार जी सुरेश कुमार जी पाण्ड्या
38/12, शक्ति नगर, दिल्ली-7, मो. 9310406056

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(स्थापना)

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा- अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पाते शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) ।।

श्री अभिनन्दननाथ स्तवन

(शम्भू छन्द)

हे स्वामिन! शुभ भक्ति आपकी, भाव सहित जो करे यथार्थ ।
मुख से स्तुति करे आपकी, गुण गाता है जो निस्वार्थ ।।
विनती करने हेतु आपकी, शीश धरे जो हस्त कमल ।
धन्य है उसका यह नर जीवन, करें अर्चना चरण विमल ।।1।।

जो भव भ्रमण से बचना चाहो, चरण कमल की करना सेव ।
यदि चरण ना मिलें कदाचित, कुछ भी करना आप सदैव ।।
पर कुदेव को नहीं पूजना, खाय अन्न भूखा नर–मौन ।
अन्न यदि दुर्लभ हो जावे, कालकूट विष खाये कौन? ।।2।।

सहस नयन से इन्द्र देखता, निरूपाधिक सुन्दर तम देह ।
गदगद वाणी रोमांचित हो, प्रभु से करे न कौन स्नेह ।।
हर्ष अश्रु नयनों से झरते, शीश झुका द्वय जोड़े हाथ ।
चित्त प्रफुल्लित होता भगवन्, खुश हो चरण झुकाएँ माथ ।।3।।

तीन लोक के रक्षक ज्ञाता, कर्म शत्रु के शासक नाथ ।
श्री उत्पादक श्रेष्ठ सुरों में, त्रय विधि तव चरणों में माथ ।।
शरणागत कल्याण प्रदायक, मैं हूँ आपकी चरण शरण ।
छोड़ उपेक्षा रक्षा कीजे, विशद प्रार्थना करो वरण ।।4।।

तीन लोक के अधिपति सारे, राजा महाराजा अरु देव ।
कोटि मुकुट की शोभा पाकर, चरण कमल शोभित हैं एव ।।
कर्म रूप वृक्षों को जिनने, विशद किया जड़ से निर्मूल ।
चन्द्र समान सुशीतल जिनके, भक्ती करूँ चरण पद मूल ।।5।।

दोहा **गुण गाते जो भाव से, श्री जिन के शुभकार ।**
अल्प समय में जीव वह, पाते भव से पार ।।

इत्याशीर्वाद; पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री अभिनन्दननाथ पूजन

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।

अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय मंगलकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(छन्द–अष्टक)

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
क्षीर नीर के कलश मनोहर, भर करके हम लाए हैं ।
जन्म मरण के नाश हेतु हम, पूजा करने आए हैं ।
भव की तृषा मिटाने वाली, अर्चा है भगवान की।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्धु सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2

कश्मीरी केसर में चन्दन, हमने श्रेष्ठ घिसाया है ।
जिसकी परम सुगन्धी द्वारा, मन मधुकर हर्षाया है ।।
भव आताप नशाने वाली, अर्चा है भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवल ज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
कर्मबन्ध के कारण प्राणी, जग के सब दुख पाते हैं ।
जन्म जरा मृत्यू को पाकर, भव सागर भटकाते हैं ।।
अक्षय पद देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम् –2
काम वासना में सदियों से, तीन लोक भटकाए हैं ।
पुष्प सुगन्धित लेकर चरणों, मुक्ती पाने आए हैं ।।
श्री जिनेन्द्र की पूजा पावन, आतम के कल्याण की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम् –2 ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
क्षुधा रोग की बाधाओं से, जग में बहुत सताए हैं ।
नाश हेतु हम बाधाओं के, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं ।।
क्षुधा नाश करने वाली है, पूजा श्री भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिनपूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम–वन्दे जिनवरम्–2
मोह तिमिर में फँसकर हमनें, जीवन कई बिताए हैं ।
मोह महातमनाश होय मम्, दीप जलाने लाए हैं ।।
मम् अन्तर में होय प्रकाशित, ज्योती सम्यक् ज्ञान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
इन्द्रियों के विषयों में फँसकर, निजानन्द सुख छोड़ दिया ।
आत्म ध्यान करने से हमने, अपने मुख को मोड़ लिया ।।
अष्ट कर्म की नाशक होती–अर्चा जिन भगवान की ।

प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योति केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
कर्म शुभाशुभ जो भी करते, उसके फल को पाते हैं ।
भेद ज्ञान के द्वारा प्राणी, आतम ज्ञान जगाते हैं ।।
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

बन्धू सब मिल करो अर्चना, अभिनन्दन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2
लोकालोक अनादी शाश्वत्, पर द्रव्यों से युक्त कहा ।
सप्त तत्त्व अरु पुण्य पाप की, श्रद्धा के बिन बना रहा ।।
पद अनर्घ देने वाली है, अर्चा जिन भगवान की ।
प्रगटित होती जिन पूजा से, ज्योती केवलज्ञान की ।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2 ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

छठी शुक्ल वैशाख माह का, शुभ दिन आया मंगलकार ।
माँ सिद्धार्था के उर श्री जिन, अभिनन्दन लीन्हें अवतार ।।

अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला षष्ठ्यां गर्भकल्याण प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल द्वादशी को जग में, अतिशय हुआ था मंगलगान ।
जन्म लिए अभिनन्दन स्वामी, इन्द्र किए तब प्रभु गुणगान ।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय–जयकार ।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार ।।2।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादशी शुभम् थी माघ सुदी, प्रभु अभिनन्दन संयम धारे ।
ले चले पालकी में नर–सुर, वह सब बोले जय–जयकारे ।।
हम वन्दन करते चरणों में, मम् जीवन यह मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

चौदस सुदी पौष की आई, अभिनन्दन तीर्थंकर भाई ।
पावन केवलज्ञान जगाए, सुर–नर वंदन करने आए ।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया ।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते ।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लां चतुर्दश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्ठी शुक्ल वैशाख पिछानो, सम्मेदाचल गिरि से मानो ।
अभिनन्दन जिन मुक्ती पाए, कर्म नाशकर मोक्ष सिधाए ।।

हम भी मुक्ति वधु को पाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ ।
अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी, बनने को शिव पद के धारी ।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला षष्ठम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **अभिनन्दन वन्दन करूँ, भाव सहित नतभाल ।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल ।।

(सखी छन्द)

जय अभिनन्दन त्रिपुरारी, जय–जय हो मंगलकारी ।
तुम जग के संकटहारी, जय–जय जिनेश अविकारी ।।
प्रभु अष्टकर्म विनसाए, अष्टम वसुधा को पाए ।
तव चरण शरण को पाएँ, भव बन्धन से बच जाएँ ।।
हमने भव–भव दुख पाए, अब उनसे हम घबड़ाए ।
तुम भव बाधा के नाशी, हो केवल ज्ञान प्रकाशी ।।
तव गुण का पार नहीं है, तुम सम न कोई कहीं है ।
भव–भव में शरणा उपाई, पर आप शरण न पाई ।।
यह थे दुर्भाग्य हमारे, जो तुम सम तारण हारे ।
मन मेरे न भाए, अत एव जगत भरमाए ।।
अब जागे भाग्य हमारे, जो आए द्वार तुम्हारे ।
तव श्रेष्ठ गुणों को गाएँ, न छोड़ कहीं अब जाएँ ।।
अर्चा कर ध्यान लगाएँ, तुमको निज हृदय सजाएँ ।
तव चरणों में रम जाएँ, जब तक न मुक्ति पाएँ ।।
है विनती यही हमारी, हे त्रिभुवन के अधिकारी ।
बस यही भावना भाते, प्रभु सादर शीश झुकाते ।।

भक्तों पर करुणा कीजे, अब और सजा न दीजे ।
हम सेवक बनकर आए, अपनी यह अर्ज सुनाए ।।
कई जीव प्रभु तुम तारे, भव सागर पार उतारे ।
हे त्रिभुवन के सुख दाता, हे जिनवर ! भाग्य विधाता ।।
हे मोक्ष महल के स्वामी! त्रिभुवन के अन्तर्यामी ।
तुमने शिव पद को पाया, यह रही धर्म की माया ।।

(छन्द : घत्तानन्द)

हे जिन! अभिनन्दन, पद में वन्दन, करने हम द्वारे आए ।
मेंटो भव क्रंदन, पाप निकन्दन, अर्घ्य चढ़ाने हम लाए ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा– **भाव सहित वन्दन करें, अभिनन्दन जिन देव ! ।**
पुष्पांजलि करके विशद, पूजें तुम्हें सदैव ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

प्रथम वलयः

दोहा– **नो कषाय को नाश कर, हुए आप अरहंत ।**
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भव का अंत ।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।

अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय मंगलकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

नो कषाय रहित जिनपूजा के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

करके हास्य कषाय जीव कई, कर्म बन्ध करते भारी ।
शिव पथ के राही कषाय तज, हो जाते हैं अविकारी ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।1।।

ॐ ह्रीं हास्य कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रति उदय में जिसके आवे, औरों से वह प्रीति करे ।
यह कषाय दुखकारी जग में, प्राणी के गुण पूर्ण हरे ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।2।।

ॐ ह्रीं रति कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति भाव का उदय होय तो, अप्रीति का भाव जगे ।
कर्मोदय के कारण प्राणी, दुरित मार्ग पर स्वयं लगे ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।3।।

ॐ ह्रीं अरति कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, जिनके मन में आता शोक ।
यह कषाय दुखदायी जग में, पूर्ण लगाना इस पर रोक ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।4।।

ॐ ह्रीं शोक कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तू, व्याकुल हो जाते हैं जीव।
कर्मोदय में जग के प्राणी, कर्म बन्ध भी करें अतीव।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।5।।

ॐ ह्रीं भय कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण दोषों को देख जुगुप्सा, मन में आती जिसके खास ।
कर्मबन्ध करते वे भारी, निज गुण में न होवे वास ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें।।6।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री वेद उदय में आते, पुरुष की मन में चाह जगे।
स्त्री वेद कहलाता हैं वह, विषयों में वह जीव लगे ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें।।7।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुष वेद का उदय होय तो, रमण करें नारी के साथ ।
होय कषाय का उदय जीव के, कर्मबन्ध हो उसके माथ ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।8।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद कर्म रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर-नारी से रमण की आशा, करते जो संसारी जीव ।
वेद नपुंसक के धारी वह, करते रहते बन्ध अतीव ।।
कहा परिग्रह नो कषाय यह, जिन तीर्थंकर नाश करें ।
विशद गुणों को पाने वाले, केवलज्ञान प्रकाश करें।।9।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद रहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **नो कषाय को नाश कर, करते शिवपुर वास।**
पूजा करते भक्त यह, पूरी कर दो आस।।

ॐ ह्रीं नो कषाय विनाशनाय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा– **दोष अठारह से रहित, अभिनंदन भगवान ।**
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण ।।

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जय-जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय-जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।

अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय मंगलकारी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

18 दोष रहित जिनेन्द्र देव अर्घ्य

(सखी छन्द)

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो जन्म दोष को पावें, वे मरकर फिर उपजावे ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं रोग-दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।10।।

ॐ ह्रीं मद दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।11 ।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए ।
जिनवर यह दोष नशाएं, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह कमठ रूप हो जाए ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए ।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी ।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।18।।

ॐ ह्रीं श्री मृत्यु दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **अभिनन्दन भगवान ने, कीन्हे दोष विनाश ।**
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, शिवपुर किया निवास ।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष विनाशक श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– **पूजा करते जिन चरण, आके बत्तिस देव ।**
पुष्पांजलि करते विशद, नत हो सतत् सदैव ।।

(तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।

अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

बत्तीस देव पूजित जिन के अर्घ्य

(भुजंगप्रयात–छन्द)

असुर इन्द्र पंक भाग भवनों से आवें, पूजा को द्रव्य के थाल भर लावें।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावें, चरणों में नत होके माथा झुकावें।।1।।

ॐ आं क्रों ह्रीं असुर कुमार देव ! पादपदमार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र खर भाग भवनों से आते, भक्ती में अपने जो मन को लगाते।
जिनवर की पूजा अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।2।।

ॐ आं क्रों ह्रीं नागकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र भवनवासी महिमा दिखाते, अर्चा में अपने जो मन को लगाते।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।3।।

ॐ आं क्रों ह्रीं विद्युतकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र पूजा कर मन में हर्षावे, जयकारा बोल के महिमा जो गावे ।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।4।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सुपर्णकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र खर भाग भवनों के वासी, करते हैं अर्चना जिनवर की खासी।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।5।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अग्निकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र भवनों से फल लेके आवें, भक्ती में लीन हो जिनके गुण गावें।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।6।।

ॐ आं क्रों ह्रीं मारूतेन्द्र देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनित इन्द्र की महिमा है न्यारी, चरणों का बनता जो प्रभु के पुजारी।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।7।।

ॐ आं क्रों ह्रीं स्तनित कुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधि इन्द्र की भक्ति जग से निराली, भव्य प्राणियों का जो मन हरने वाली।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।8।।

ॐ आं क्रों ह्रीं उदधिकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपेन्द्र भक्ती से दीपक जलावे, नाचे औ गावे जो मन से हर्षावे।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत होके माथा झुकावे।।9।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दीपकुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक् सुरेन्द्र भवनालय वासी कहावे, पूजा को परिवार साथ में जो लावे।
जिनवर की पूजा वे अनुपम रचावे, चरणों में नत हो के माथा झुकावे।।10।।

ॐ आं क्रों ह्रीं दिक्ककुमार देव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

किन्नर इन्द्र प्रथम व्यन्तर का जानिए, श्री जिनवर का भक्त जिसे पहिचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।11।।

ॐ आं क्रों ह्रीं किन्नरेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र किम्पुरुष द्वितिय व्यन्तर का कहा, भव्य भ्रमर जिन चरण कमल का जो रहा।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।12।।

ॐ आं क्रों ह्रीं किम्पुरुष इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र महोरग व्यन्तर का जानो सही, जिन चरणों में उसकी भी भक्ती रही।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।13।।

ॐ आं क्रों ह्रीं महोरगेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र रहा गन्धर्व व्यन्तरों का अहा, हो जिनेन्द्र की पूजा वह पहुँचे वहाँ।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।14 ।।

ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धर्वेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र की महिमा का ना पार है, जिसकी भक्ती रहती अपरम्पार है।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।15।।

ॐ आं क्रों ह्रीं यक्षेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस इन्द्र भी आवें भावों से भरे, भक्ती करके औरों के मन को हरे।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।16।।

ॐ आं क्रों ह्रीं राक्षसेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र भी अपनी वृत्ती छोड़ते, जिन अर्चा से अपना नाता जोड़ते।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।17।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भूतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाच इन्द्र आते हैं भावों से अरे !, नव कोटी से भक्ती भावों से भरे।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।18।।

ॐ आं क्रों ह्रीं पिशाचेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र ज्योतिष का भाई जानिए, जिन चरणों का भक्त भ्रमर पहिचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।19।।

ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रदेव स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योतिष गाया है प्रतीन्द्र सूरज महा, जिन चरणों का भक्त श्रेष्ठतम जो रहा।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से।।20।।

ॐ आं क्रों ह्रीं भास्करेन्द्रेण स्वपरिवार सहितेन पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शेर छन्द)

सौधर्म इन्द्र श्री फल ले, स्वर्ग से आवे ।
पूजा करे प्रसन्न हो, मन हर्ष बढ़ावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।। 21।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सौधर्मेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्रपूंगी फल, साथ में लावे ।
होके सवार गज पे, भक्ति से जो आवे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।22।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ईशानेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सनत कुमार इन्द्र, गजारूढ़ हो आवे ।
आमों के गुच्छे साथ में, परिवार जो लावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।23।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सानतकुमार इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र केले के, गुच्छे ले आवे ।
होके सवार अश्व पे, परिवार को लावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।24।।

ॐ आं क्रों ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होके सवार ब्रह्म इन्द्र, हंस पे आवे।
जो पुष्प केतकी से, प्रभु पूज रचावे।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का, हम साथ लाए हैं ।।25।।

ॐ आं क्रों ह्रीं ब्रह्मेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र दिव्य फल ले, भाव से आवे ।
परिवार साथ में लाके, हर्ष मनावे ।।
श्री जिनेन्द्र की शुभ, पूजा को आए हैं ।
यह थाल अष्ट द्रव्य का हम, साथ लाए हैं ।।26।।

ॐ आं क्रों ह्रीं लान्तवेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चकवा पे हो सवार इन्द्र, शुक्र भी आवे ।
शुभ पुष्प ले सेवन्ती, के पूज रचावे ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।27।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शुकेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामामिति स्वाहा।

कोयल पे हो सवार, शतारेन्द्र जो आवे ।
जो नील कमल से पूजे, अर्घ्य चढ़ावे ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।28।।

ॐ आं क्रों ह्रीं शतारेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ के गरूड़ पे आनतेन्द्र, वेग से आवे ।
परिवार सहित श्री जिन को, पूज रचावे ।।

तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।29।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आनतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामामिति स्वाहा।

चढ़के विमान पद्म पे, प्राणतेन्द्र भी आवे ।
परिवार सहित तुम्बरू ले, हर्ष मनावे।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।30।।

ॐ आं क्रों ह्रीं प्राणतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ के कुमुद विमान पे, आरणेन्द्र जो आवे ।
परिवार सहित गन्ने ले, आन चढ़ावे।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।31।।

ॐ आं क्रों ह्रीं आरणेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र हो सवार, मयूर पे आवे ।
परिवार सहित भक्ती से, चँवर ढुरावे ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।32।।

ॐ आं क्रों ह्रीं अच्युतेन्द्र ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतु द्वारपाल द्वारा पूजित जिनेन्द्र के अर्घ्य

पूर्व दिशा का द्वारपाल, सोम कहावे ।
अर्चा करे विनय से, पद शीश झुकावे ।।

तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।33।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री सोमदेव ! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण का द्वारपाल है, यमदेव भी भाई ।
करता चरण की वन्दना, जो श्रेष्ठ सुखदाई ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।34।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिशा का द्वारपाल, वरूण देव है ।
भक्ती में लीन रहता, जिन की सदैव है ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।35।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री वरुण देव! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा का द्वारपाल, श्रेष्ठ जानिए ।
कहलाए जो कुबेर देव, आप मानिए ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।36।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री कुबेर देव! पादपद्मार्चिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवन वासी ज्योतिष अरु, व्यन्तर वासी ।
बारह सुरेन्द्र आते, कल्पों के प्रवासी ।।
तीर्थेश के चरण में, हम अर्घ्य चढ़ाते ।
भक्ती से विनत होके, पद शीश झुकाते ।।37।।

ॐ आं क्रों ह्रीं श्री षड् त्रिंशत् देव पूजित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा– **सोलह कारण भाव यह, शिव के हैं सोपान ।**
तीर्थंकर गुण प्राप्त कर, करें आत्म कल्याण ।।

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जय–जय जिन अभिनन्दन स्वामी, जय–जय मुक्ति वधू के स्वामी ।
पावन परम कहे सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी ।।

अतिशय कहे गये जो पावन, जिनकी महिमा मनभावन ।
भाव सहित हम वन्दन करते, करते उर में आह्वानन ।।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो हे त्रिपुरारी ।
तुम हो तीन लोक के स्वामी, मंगलमय अन्तर्यामी ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

सोलह कारण भावना के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

भव–भव के घने अंधेरे को, जो सूरज बनकर नष्ट करें ।
दर्शन विशुद्धि धारण कर लें, जो जग के सारे कष्ट हरें ।।
हम सोलह कारण भा–भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत पद में रम जाएँ ।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ विनय भाव भव नाशक है, जल जाते कष्टों के जंगल ।
यह विनय भाव है मेघ विशद, छा जाते मंगल ही मंगल ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिचार हीन व्रत शुद्ध शील, संयम को अंगीकार करें ।
मन के मतवाले हाथी पर, शीलांकुश से अधिकार करें ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ ।।3।।

ॐ ह्रीं शील व्रतेष्वनतिचार भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान स्वभावी चेतन में, उपयोग निरन्तर लगा रहे ।
बस ज्ञान ज्ञान की धारा में, चैतन्य अभीक्ष्ण जगा रहे ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार देह से भोगों से, जब उदासीनता आ जाए ।
है वस्तु स्वभाव धर्म मेरा, संवेग भाव यह कहलाए ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस श्रावक के घर में उत्तम, शुभ त्याग वृत्तिमय दान नहीं ।
उस घर के जैसा अन्य कोई, मरघट और शमशान नहीं ।।

हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शक्ति तस्त्याग भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्दी गर्मी वर्षा ऋतु में, योगीश्वर तप को करते हैं ।
इस उत्तम तप के द्वारा ही, केवल्य प्राप्त वह करते हैं ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ ।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संत साधना में प्राणी, अपना उपयोग लगाते हैं ।
परिचर्या करते हैं उनकी, वह साधु समाधी पाते हैं ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का निज शाश्वत् पद में रम जाएँ ।।8।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक की आत्म साधना में, जो बाधाओं को हरते हैं ।
कृषकाय तपस्वी की सेवा, कर वैयावृत्ती करते हैं ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ ।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ती भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो घाती कर्म विनाश किए, केवल्य ज्ञान फिर प्रगटाए ।
उनके गुण में अनुराग विशद, शुभ अर्हद् भक्ती कहलाए ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हत् भक्ति सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप धर्म गुप्ति आचारवान, छह आवश्यक के धारी हैं ।
निर्ग्रन्थ संत की भक्ती शुभ, आचार्य भक्ति शुभकारी है ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाए।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो द्वादशांग के ज्ञाता हैं, गुण पच्चिस उपाध्याय पाए ।
उनकी भक्ती अर्चा करना, बहुश्रुत भक्ती शुभ जिन गाए ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

परमागम श्री जिन प्रवचन में, शुभ द्रव्य तत्त्व का कथन रहा ।
जिन प्रवचन में अवगाहन हो, यह प्रवचन भक्ती भाव कहा ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता वन्दन आदिक मुनि के, छह आवश्यक कर्त्तव्य कहे ।
इनका परिहार नहीं करना, आवश्यक यह अपरिहार्य रहे ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाए।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहार्य भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजरथ विमान पूजा विधान, अभिषेक महोत्सव हो भारी ।
जिन बिम्ब प्रतिष्ठा इत्यादिक्, मारग प्रभावना शुभकारी ।।

हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देव शास्त्र गुरु भक्तों पर, ममता विहीन वात्सल्य रहे ।
प्रवचन वात्सल्य यही जानो, उर में करूणा की धार बहे ।।
हम सोलह कारण भा-भाकर, तीर्थंकर की पदवी पाएँ ।
भव भ्रमण मैट चारों गति का, निज शाश्वत् पद में रम जाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्व भावना सहिताय श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्म के अर्घ्य *(चौपाई छन्द)*

क्रोध कषाय को पूर्ण नशावें, उत्तम क्षमा धर्म वह पावें ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।17।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद की दम का करें सफाया, उनने मार्दव धर्म उपाया ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छोड़ रहे जो मायाचारी, होते वे आर्जव के धारी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जवधर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लोभ नाश जिसका हो जाए, वह ही शौच धर्म प्रगटाए ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असत् वचन के हैं जो त्यागी, सत्य धर्म धारी बड़भागी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नहीं असंयम जिसको भाए, वह संयम धारी कहलाए ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म निर्जरा करने वाले, उत्तम तप धर रहे निराले ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्विविध संग से रहित बताए, उत्तम त्याग धर्मधर गाए ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किन्चित राग रहित अविकारी, उत्तम आकिन्चन व्रतधारी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिन्चन्य धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत धारी, होते आतम ब्रह्म विहारी ।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी ।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छियालिस मूलगुणधारी श्री अभिनन्दननाथ जिन

जन्म के अतिशय के अर्घ्य *(ताटंक छन्द)*

प्रभु का शरीर अतिशय सुन्दर, होता अनुपम विस्मयकारी ।
तीर्थंकर पद का बन्ध किया, शुभ पुण्य की है यह बलिहारी ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।27।।

ॐ ह्रीं सुन्दरतन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर जन्म के अतिशय में, इक यह भी अतिशय पाते हैं ।
प्रभुवर के तन की खुशबू से, लोकत्रय सुरभित हो जाते हैं ।।

श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।28।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तनसहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पुण्य उदय से पूरब के, कई ऐसे अतिशय हो जाते ।
न स्वेद रहे तन में किंचित्, कई इन्द्र चरण आश्रय पाते ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।29।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस अतिशय में यह भी अतिशय, मल-मूत्र रहित तन पाते हैं ।
आहार ग्रहण करते फिर भी, जिनवर निहार नहिं जाते हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।30।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय जिनवर की वाणी, मन को संतोष दिलाती है ।
करती प्रसन्न सारे जग को, जन-जन का मन हर्षाती है ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।31।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर सुर के इन्द्र सभी जिनकी, शक्ती के आगे हारे हैं ।
अद्भुत अतुल्य बल के स्वामी, जग में जिनदेव हमारे हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।32।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रग-रग में जिनके करुणा अरु, वात्सल्य झलकता रहता है ।
है श्वेत रुधिर जिनका पावन, जो सारे तन में बहता है ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।33।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण एक हजार आठ, श्री जिनके तन में होते हैं ।
ये मंगलमय सर्वोत्तम हैं, भव्यों की जड़ता खोते हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।34।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभलक्षण सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकार मनोहर समचतुस्र, सुन्दर सुडौल तन पाते हैं ।
परमाणू जितने जग में शुभ, मानो सब मिलकर आते हैं ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।35।।

ॐ ह्रीं समचतुष्कसंस्थान सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वज्र वृषभनाराच संहनन, जो अतिशय शक्तिशाली है ।
जिनवर हैं जग में सर्वश्रेष्ठ, महिमा कुछ अजब निराली है ।।
श्री अभिनन्दन के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं ।
हम भी उस पद को पा जाएँ, यह विशद भावना भाते हैं ।।36।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय के अर्घ्य

शुभ केवल ज्ञान प्रकट होते, अतिशय सुभिक्ष हो जाता है ।
सौ योजन सर्वदिशाओं में, अपनी सुवास बिखराता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।37।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब केवलज्ञान उदित होता, तब गगन गमन हो जाता है ।
सुर पाँच हजार धनुष ऊपर, शुभ कमल रचाने आता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।38।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का अतिशय महिमाशाली, इक मुख के चार दिखाते हैं ।
बस उत्तर पूर्व सुमुख प्रभु का, हम समवशरण में पाते हैं ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।39।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बैर विरोध रहा जग में, प्रभु दर्शन से नश जाता है ।
आपस में प्रीति झलकती है, करुणा का स्रोत उभरता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।40।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म घातिया नश जाते, कैवल्य प्रगट हो जाता है ।
तब चेतन और अचेतन कृत, उपसर्ग नहीं हो पाता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।41।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अतिशय रहा परम पावन, प्रभु कवलाहार नहीं करते ।
नो कर्म वर्गणाओं द्वारा, प्रभु चेतन में ही आचरते ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।42।।

ॐ ह्रीं कवलाहार रहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मंत्र-तंत्र में नीति निपुण, सब विद्याओं के ईश्वर हैं ।
न जग में रहा कोई बाकी, प्रभु पृथ्वी पती महीश्वर हैं ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।43।।

ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह केवलज्ञान की महिमा है, प्रभु हो जाते अन्तर्यामी ।
नख केश नहीं बढ़ते किंचित्, तन होता है जग में नामी ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।44।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की है सौम्य शांत दृष्टी, नासा पर सदा लगी रहती ।
प्रभु वीतरागता धारी हैं, अन्तर की बात मुखर कहती ।।

सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।45।।

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का शरीर परमौदारिक है, पुद्गल निमित्त बन पाता है ।
छाया से रहित रहा फिर भी, जो सबके मन को भाता है ।।
सुर इन्द्र नरेन्द्र यती गणधर, जिन अभिनन्दन को ध्याते हैं ।
हम चरण वन्दना करते हैं, प्रभु सादर शीश झुकाते हैं ।।46।।

ॐ ह्रीं छायारहित सहजातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह देवकृत अतिशय के अर्घ्य

शुभ दिव्य देशना जिनवर की, सर्वार्ध मागधी भाषा में ।
यह देवों का अतिशय मानो, समझो मागध परिभाषा में ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।47।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीभाषादेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ओर प्रभु के चरण पड़ें, जन-जन में मैत्री भाव रहे ।
न बैर विरोध रहे क्षणभर, जग में खुशियों की धार बहे ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।48।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर का गमन जहाँ होता, तो सर्व दिशाएँ हों निर्मल ।
तब देव सभी अतिशय करते, धो देते हैं सारा कलमल ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।49।।

ॐ ह्रीं सर्वदिग्निर्मलत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का समवशरण लगते, आकाश श्रेष्ठ निर्मल होवे ।
यह चमत्कार है देवों का, सारे जो दोषों को खोवे ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।50।।

ॐ ह्रीं शरदकालवन्निर्मलगगनदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ समवशरण प्रभु का आते, खिलते हैं एक साथ फल-फूल।
भर जाते हैं खेत धान्य से, तरुवर झुक जाते अनुकूल ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।51।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादितरुपरिणाम देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रभु के चरण जहाँ पड़ते, भू कंचनवत् हो जाती है।
वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते, दर्पणवत् होती जाती है ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।52।।

ॐ ह्रीं आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन मध्य ज्यों पग रखते सुर, स्वर्ण कमल रचते पावन ।
वह सात-सात आगे पीछे, इक मध्य पंचदश मनभावन ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।53।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतलरचितस्वर्णकमलदेवोपुनीताशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलकर, भक्ती से जय-जयकार करें ।
आओ-आओ सब भक्ति करें, चारों ही ओर पुकार करें ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।54।।

ॐ ह्रीं एतेतैतिचतुर्णिकायामर परापराह्वान देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चलती है मन्द सुगन्ध पवन, सब व्याधी विषम विनाश करे।
जन-जन को अति सुरभित करती, मन में अतिशय उल्लास भरे।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।55।।

ॐ ह्रीं सुगंधितविहरण मनुगतवायुत्व देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर वृष्टि करें गंधोदक की, मन में अति मंगल मोद भरें ।
ये चमत्कार शुभ भक्ती का, वह भक्ती मेघकुमार करें ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।56।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृतगंधोदकवृष्टिदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन कुमार देव मिलकर शुभ, अतिशय खूब दिखाते हैं ।
धूली कंटक से रहित भूमि पर, प्रभु का गमन कराते हैं ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।57।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादि देवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परमानन्द मिले जन-जन को, मन आनन्दित हो जाते हैं ।
रोम-रोम पुलकित हो जाए शुभ, जब प्रभु का दर्शन पाते हैं ।।

जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।58।।

ॐ ह्रीं सर्वजनपरमानंदत्वदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म चक्र को सिर पर रखकर, चलते हैं यक्ष आगे-आगे ।
यह है प्रताप अतिशयकारी, शुभ बाधा स्वयं दूर भागे ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।59।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलश ताल दर्पण प्रतीक शुभ, छत्र चँवर ध्वज अरु भृंगार ।
मंगल द्रव्य आठ देवों के, होते हैं जग में सुखकार ।।
जिन अभिनन्दन की देव कई, भक्ती करते अतिशयकारी ।
हम शीश झुकाते चरणों में, मम् जीवन हो मंगलकारी ।।60।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्यदेवोपुनीतातिशय सहित श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(नरेन्द्र छन्द)

शत् इन्द्रों से अर्चित अर्हत्, प्रातिहार्य वसु पायें ।
तरु अशोक शुभ प्रातिहार्य जिन, विशद आप प्रगटायें ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।61।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सघन पुष्प की वृष्टी करके, नभ में सुर हर्षाते ।
ऊर्ध्व मुखी हो पुष्प बरसते, जिन महिमा दिखलाते ।।

शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।62।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शरण में हुए अलंकृत, चौंसठ चँवर ढुराते ।
श्वेत चँवर ज्यों नम्रभूत हो, विनय पाठ सिखलाते ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।63।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चँवर प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घाति कर्म का क्षय होते ही, भामण्डल प्रगटावे ।
कोटि सूर्य की कांती जिसके, आगे भी शर्मावे ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।64।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आओ-आओ जग के प्राणी, प्रभू जगाने आये ।
श्रेष्ठ दुन्दुभी के द्वारा शुभ, वाद्य बजा के गाये ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।65।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश प्रभू हैं, तीन छत्र बतलाते।
गुरु लघु तम लघु ऊर्ध्व में, क्रमशः धवल काँति फैलाते ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।66।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्हत् जिन के दिव्य वचन शुभ, प्रमुदित होकर पाते ।
मोह महातम हरने वाले, सभी समझ में आते ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर सादर शीश झुकाते ।।67।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण के मध्य रत्नमय, सिंहासन मनहारी ।
कमलाशन पर अधर विराजे, अर्हत् जिन त्रिपुरारी ।।
शत् इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, की महिमा हम गाते ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, सादर शीश झुकाते ।।68।।

ॐ ह्रीं दिव्य सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(चौपाई)

ज्ञानानन्त प्रभू प्रगटाए, ज्ञानावरणी कर्म नशाए ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।69।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श अनन्त प्राप्त कर स्वामी, हुए लोक में अन्तर्यामी ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।70।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखानन्त प्रगटाने वाले, अर्हत् जग में रहे निराले ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।71।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानन्त के धारी गाये, अन्तराय प्रभु कर्म नशाए ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा न्यारी, सारे जग में मंगलकारी ।।72।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छियालिस मूल गुणों के धारी, जग में होते करुणाकारी ।
विशद भावना सोलह भाए, दशधर्मों के नाथ कहाए ।।73।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि मूल गुण एवं षोड्सकारण भावना दशधर्म सहिताय श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा– **अभिनंदन जिन पद युगल, वन्दन मेरा त्रिकाल ।**
भव क्रन्दन हो नाश मम्, गाते हैं जयमाल।।

(नयनमालिनी छन्द)

अभिनन्दन जिनराज नमस्ते, सिद्ध शिला के ताज नमस्ते ।
तीर्थंकर अखलेश नमस्ते, वीतराग परमेश नमस्ते ।।
नगर अयोध्या रत्न बरसते, नर–नारी मन खूब हरसते ।
गर्भ पूर्व छह माह नमस्ते, प्रभु करुणा की छाँह नमस्ते ।।
संवर नृप के द्वार नमस्ते, हुए मंगलाचार नमस्ते।
जन्मे श्री जिनदेव नमस्ते, स्वर्ग से आये देव नमस्ते ।।
माँ सिद्धार्था श्रेष्ठ नमस्ते, गर्भ में आए यथेष्ठ नमस्ते ।
संगारम्भ विहीन नमस्ते, निज गुणमय स्वाधीन नमस्ते ।।
वैजयन्त अवतार नमस्ते, अशुभ गती क्षयकार नमस्ते ।
मनुज गती शुभकार नमस्ते, उत्तम संयम धार नमस्ते ।।
चउ आराधन वान नमस्ते, किए कर्म की हान नमस्ते ।
राग द्वेष विहीन नमस्ते, चउ कषाय से हीन नमस्ते ।।
रत्नत्रय धर धीर नमस्ते, चिन्मूरत गंभीर नमस्ते ।
पंच महाव्रत वान् नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते ।।
नव लब्धी धरणेश नमस्ते, पंच भाव सिद्धेश नमस्ते ।
द्रव्य तत्त्व विज्ञान नमस्ते, कर्म घातिया घात नमस्ते ।।

सप्त भंग के ईश नमस्ते, जगतीपति जगदीश नमस्ते ।
अष्टम भू अधिराज नमस्ते, अष्ट गुणों के ताज नमस्ते ।।
केवल ब्रह्म प्रकाश नमस्ते, सर्व चराचर भास नमस्ते ।
मुक्ति रमापति वीर नमस्ते, हर्त्ता भव भय वीर नमस्ते ।।

(छन्द घत्तानन्द)

हम जग भटकाए, दर्श ना पाए, कर्मों की यह प्रभुताई ।
अब दर्शन पाएँ, ज्ञान जगाएँ, तव छवि मेरे मन भाई ।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **दोषो के हैं कोष हम, अल्प बुद्धि हैं नाथ ।**
गुण गाए वाचाल हो, चरण झुकाते माथ ।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाजलिं क्षिपेत् ।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः अहं आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते शास्त्री नगर स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि.सं. 2069 मासोत्तम मासे अश्विन मासे शुक्लपक्षे एकादश्यां दिन गुरूवासरे श्री अभिनन्दननाथ विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

श्री अभिनंदननाथ चालीसा

दोहा– **नव देवों के चरण में, नव कोटी के साथ।**
भक्ती करते भाव से, चरण झुकाते माथ।।
अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
मुक्ती पद के भाव से, गाते अपरम्पार।।

(चौपाई)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका कहीं न होता अंत।।1।।
बीच में तीनों लोक महान्, मध्य लोक में मध्य प्रधान।।2।।
जिसमें जम्बूद्वीप विशेष, दक्षिण में है भारत देश।।3।।
नगर अयोध्या रहा महान्, राजा संवर जिसका जान।।4।।
कश्यप गोत्र रहा शुभकार, वंश इक्ष्वाकु मंगलकार।।5।।
रानी सिद्धार्था के उर आन, गर्भ में आए जिन भगवान।।6।।
प्रत्यूष बेला रही प्रधान, पुनर्वसु नक्षत्र महान।।7।।
वैसाख शुक्ला षष्ठी जान, पाए प्रभू गर्भ कल्याण।।8।।
माघ शुक्ल बारस शुभकार, जन्म लिए जिन मंगलकार।।9।।
पुनर्वसू नक्षत्र प्रधान, राशी स्वामी बुध पहिचान।।10।।
पीत वर्ण तन का शुभकार, बन्दर चिह्न रहा मनहार।।11।।
पचास लाख पूरब की जान, आयू पाये जिन भगवान।।12।।
साढ़े तीन सौ धनुष महान्, अवगाहन प्रभु तन का जान।।13।।
प्रभु ने देखा मेघ विनाश, धारण किए आप सन्यास।।14।।
माघ शुक्ल बारस मनहार, प्रत्यूष बेला अपरम्पार।।15।।
चित्रा हस्त पालकी जान, पुनर्वसू नक्षत्र महान्।।16।।
नगर अयोध्या रहा महान्, दीक्षा स्थल उग्र उद्यान।।17।।
दीक्षा वृक्ष असन पहिचान, धनु ब्यालिस सौ उच्च महान्।।18।।
सहस भूप सह दीक्षित जान, कर बेला उपवास महान् ।।19।।

दो दिन बाद लिए आहार, क्षीर-खीर का प्रभु मनहार।।20।।
नगर अयोध्या मंगलकार, राजा इन्द्रदत्त गृहवार।।21।।
शुभ अष्टादश वर्ष विशेष, रहे आप छद्मस्थ जिनेश।।22।।
पौष शुक्ल चौदस दिनमान, प्रभु ने पाया केवल ज्ञान।।23।।
इन्द्र राज धनपति के साथ, आकर चरण झुकाए माथ।।24।।
समवशरण रचना शुभकार, साढ़े दश योजन विस्तार।।25।।
पद्मासन में बैठ जिनेश, दिव्य-देशना दिए विशेष।।26।।
गणधर इक सौ तीन महान्, वज्रनाभि थे गणी प्रधान।।27।।
तीन लाख मुनिवर अनगार, प्रभु के साथ रहे शुभकार।।28।।
यक्षेश्वर था यक्ष प्रधान, यक्षी वज्र शृंखला जान।।29।।
छठ वैसाख शुक्ल की जान, श्री सम्मेद शिखर स्थान।।30।।
खड्गासन से आप जिनेश, कूटानन्द स्थान विशेष।।31।।
सर्व कर्म का किए विनाश, सिद्ध शिला पर कीन्हें वास।।32।।
पाए ज्ञान अनन्तानन्त, सुख अनन्त पाए भगवन्त।।33।।
आप हुए अभिनन्दन नाथ, चरण झुकाते तव हम माथ।।34।।
कई जिनबिम्ब रहे शुभकार, सर्व जहाँ में मंगलकार।।35।।
अनुपम रहा दिगम्बर भेष, देते शिवपद का उपदेश।।36।।
भक्ती करें भाव के साथ, प्रभु के चरण झुकाएँ माथ।।37।।
उसका होय 'विशद' कल्याण, शीघ्र प्राप्त हो केवलज्ञान।।38।।
नश जाए क्षण में संसार, मुक्ती पद पाए शुभकार।।39।।
हम भी करते प्रभु गुणगान, प्राप्त हमें हो पद निर्वाण।।40।।

दोहा- अभिनन्दन जिनराज का, चालीसा शुभकार।
पढ़ें सुनें जो भाव से, उनका हो उद्धार।।
सुख-शांती सौभाग्य पा, जग में बने महान्।
कर्म नाश कर जीव वह, पद पावें निर्वाण।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री 1008 अभिनन्दननाथ भगवान की आरती

प्रभु अभिनन्दन की करते हम, आरति मंगलकार ।
विशद भाव से आरति लेकर, आये प्रभु के द्वार ।।
हो प्रभु जी, हम सब उतारे, मंगल आरती...

1. नगर अयोध्या जन्म लिए तब, हर्षे सब नर-नारी ।
पन्द्रह माह पूर्व इन्द्रों ने, रत्न वृष्टि की भारी ।।
हो प्रभु...

2. माँ सिद्धार्था संवर के गृह, हुए आप अवतारी ।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराए, इन्द्र सभी शुभकारी ।।
हो प्रभु...

3. साढ़े तीन सौ धनुष प्रभु के, तन की है ऊँचाई ।
लाख पचास पूर्व की आयू, श्री जिनवर ने पाई ।।
हो प्रभु...

4. माघ सुदी बारस को प्रभु जी, उत्तम तप अपनाए ।
पौष सुदी चौदस को अनुपम, केवलज्ञान जगाए ।।
हो प्रभु...

5. छठी शुक्ल वैशाख मोक्ष पद, गिरि सम्मेद से पाए ।
'विशद' गुणों को पाने प्रभु की, आरति करने आए ।।
हो प्रभु...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 140 विधानों की विशाल श्रृंखला

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह-1
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्मचक्र विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत् नाम विधान।
81. सम्यक् आराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युञ्जय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बूद्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
91. वृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (लघु)
97. सहस्रनाम विधान (लघु)
98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
99. त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
100. पुण्यास्रव विधान
101. सप्त ऋषि विधान
102. तेरह द्वीप मण्डल विधान
103. श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावक व्रत दोष प्रायश्चित्त विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान
108. ज्ञान पच्चीसी विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
117. षट् खण्डागम विधान
118. दिव्य देशना विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. रक्षा बन्धन विधान
122. सोलह कारण विधान
123. तीर्थंकर विधान
124. गणधर वलय विधान (लघु)
125. गणधर वलय विधान (वृहद्)
126. गिरनार गिरि विधान
127. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
128. ऋषि मण्डल विधान
129. कालसर्प दोष निवारक विधान
130. शनि ग्रह अरिष्ट निवारक विधान
131. वास्तु विधान (लघु)
132. भक्तामर विधान (चौपाई)
133. पद्मावती विधान
134. क्षेत्रपाल विधान
135. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान
136. बड़े बाबा विधान
137. कल्पद्रुम विधान (लघु)
138. लक्ष्मी प्राप्ति विधान
139. महावीर समवशरण विधान
140. चान्दनपुर महावीर विधान
141. विशद पञ्चागम संग्रह
142. जिन गुरु भक्ति संग्रह
143. धर्म की दस लहरें
144. स्तुति स्तोत्र संग्रह
145. विराग वंदन
146. बिन खिले मुरझा गए
147. जिन्दगी क्या है
148. धर्म प्रवाह
149. भक्ति के फूल
150. विशद श्रमण चर्या
151. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
152. इष्टोपदेश चौपाई
153. द्रव्य संग्रह चौपाई
154. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
155. समाधितन्त्र चौपाई
156. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
157. संस्कार विज्ञान
158. बाल विज्ञान भाग-3
159. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
160. विशद स्तोत्र संग्रह
161. भगवती आराधना
162. चिंतवन सरोवर भाग-1
163. चिंतवन सरोवर भाग-2
164. जीवन की मनःस्थितियाँ
165. आराध्य अर्चना
166. आराधना के सुमन
167. मूक उपदेश भाग-1
168. मूक उपदेश भाग-2
169. विशद प्रवचन पर्व
170. विशद ज्ञान ज्योति
171. जरा सोचो तो
172. विशद भक्ति पीयूष
173. विशद मुक्तावली
174. संगीत प्रसून
175. आरती चालीसा संग्रह
176. भक्तामर भावना
177. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
178. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
179. विशद महा अर्चना संग्रह
180. विशद जिनवाणी संग्रह
181. विशद वीतरागी संत
182. काव्य पुञ्ज
183. पञ्च जाप्य
184. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
185. बिजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
186. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर